بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 24
Issue - 08

राह-ए-ईमान

अगस्त
2022 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 8.7.2022).....8
7. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक काव्य रचना.....11
8. राष्ट्राध्यक्षों के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आचरण.....12
9. देशवासियों से अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक का निवेदन.....23
10. सामान्य ज्ञान.....28
11. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

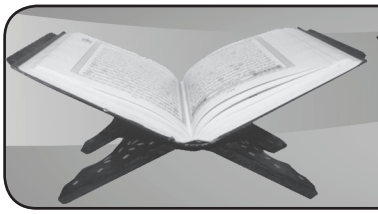

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا. وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا

अनुवाद: और तुम्हारे रब ने फ़रमाया कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो और अपने माँ-बाप पर मेहरबानी करो। यदि उनमें से एक या दोनों तुम्हारे पास वृद्धावस्था को पहुँच जाएं, तो उन्हें "उफ़" तक न कहें और उन्हें फटकार न दें और उन्हें नम्रता और सम्मान के साथ संबोधित करें। और उन दोनों के लिए रहम से नरमी के पर झुका दे और कह कि ए मेरे रब! इन दोनों पर रहम कर जिस तरह इन दोनों ने बचपन में मेरी तर्बीयत की। (सूर: बनी इस्राईल 24-25)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद वर्णन करते हैं कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि कौन सा काम अल्लाह तआला को ज़्यादा पसंद है। आपने फ़रमाया: समय पर नमाज़ पढ़ना। मैंने कहा कि इसके बाद कौन सा ? आप ने फ़रमाया: माँ बाप से अच्छा व्यवहार करना। फिर मैंने कहा कि इसके बाद कौन सा ? आपने फ़रमाया: अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करना अर्थात ख़ुदा तआला के धर्म के प्रचार के लिए पूरी कोशिश करना।

(बुख़ारी किताबुल जिहाद)

अनुवाद: अबू कतादा वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कभी कभी मैं नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़ा होता हूँ और चाहता हूँ कि लंबी नमाज़ पढ़ाउं लेकिन जब मैं किसी बच्चे की रोने की आवाज़ सुनता हूँ तो नमाज़ छोटी कर देता हूँ इस डर से कि कहीं उसकी माँ को घबराहट न हो। (बुख़ारी किताबुस्सलात)

☆ ☆ ☆

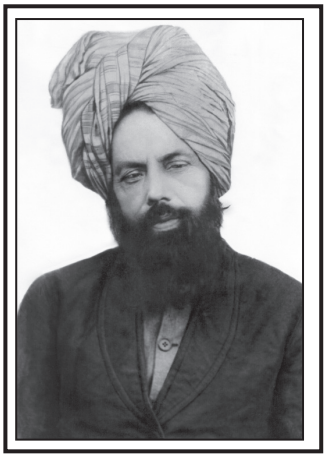

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

अनाथ पोते का मसअला (मुआमला)

अरब साहब ने प्रश्न किया कि एक व्यक्ति ने मुझ पर ऐतराज किया था कि इस्लामी शरीयत के अनुसार वसीयत में पोते के लिए कोई हिस्सा नहीं है। अगर एक व्यक्ति का पोता अनाथ है तो जब वह व्यक्ति मरता है तो उसके दूसरे बेटे हिस्सा लेते हैं और यद्यपि वह भी उसके बेटे की औलाद है परंतु वह महरूम (वंचित) रहता है।

हजरत साहब ने फ़रमाया कि : दादा का अधिकार है कि वसीयत के समय अपने पोते को कुछ दे दे बल्कि जो चाहे दे दे। असल में बाप के बाद बेटे वारिस करार दिए गए हैं ताकि क्रम (तरतीब) बरक़रार रहे और अगर इस प्रकार न कहा जाता तो फिर क्रम कदापि बरक़रार न रहता। क्योंकि फिर अनिवार्य होता है कि पोते का बेटा भी वारिस हो और फिर आगे उसकी औलाद हो, तो वह भी वारिस हो। इस अवस्था में दादे का क्या कसूर है। यह ख़ुदा का क़ानून है और इससे हर्ज नहीं होता वरना इस प्रकार तो हम सब आदम की औलाद हैं और जितने रा-महाराजे हैं वे भी आदम की औलाद है तो हमको चाहिए कि सब के साम्राज्य से हिस्सा लेने का निवेदन करें। चूंकि बेटे की अपेक्षा आगे पोते में जाकर (रिश्ते में) कुछ कमजोरी हो जाती है और एक सीमा पर जाकर तो केवल नाम रह जाता है। ख़ुदा ताला को यह ज्ञान था कि इस प्रकार नस्ल में और रिश्ते में कमज़ोरी हो जाती है इसलिए यह कानून रखा। हां, ऐसी भलाई और रहम की खातिर ख़ुदा तआला ने एक और कानून रखा है जैसे कि पवित्र कुरान में है :

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا (अन्निसा-4/9)

(अर्थात और जब ऐसे विभाजन के समय कुछ रिश्तेदार मौजूद हों और यतीम और मिस्कीन हों तो उनको कुछ दे दिया करो। तो वह पोता जिसका बाप मर गया है वह यतीम होने के लिहाज़ से इस रहम का अधिक हक़दार है। और यतीम में वे लोग भी सम्मिलित हैं (जिनका कोई हिस्सा निर्धारित नहीं किया गया।) ख़ुदा ताला ने किसी का हक नष्ट नहीं किया परंतु जैसे-जैसे रिश्ते में कमजोरी बढ़ती जाती है हक कम होता जाता है। (मलफूज़ात जिल्द- 3)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम - नहमदुहू-व-नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ (अलअनकबूत - 50)

कुछ दिन हुए कि एक ईसाई साहिब अब्दुल्लाह जेम्स नामक ने कुछ प्रश्न इस्लाम के बारे में उत्तर के लिए अंजुमन में प्रेषित किए थे अत: उनके उत्तर इस अंजुमन के तीन प्रतिष्ठित विद्वान सहयोगियों ने लिखें हैं जो कृतज्ञता के बाद समस्त इस पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए जाते हैं।

प्रथम प्रश्न – मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी नुबुव्वत पर तथा पवित्र क़ुर्आन के ख़ुदा का कलाम होने पर सन्देह करना जैसा कि सूर: अलबकर: और सूर: अलअनआम में दर्ज है-

فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ۝ (अलबक़र:-148) (अनुवाद : अत: तू उन लोगों में से मत बन जो संदेह करते हैं। अनुवादक) इस से सिद्ध होता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दिल में विश्वास रखते थे कि वह ख़ुदा के पैग़म्बर नहीं यदि वे ख़ुदा के पैग़म्बर होते या उन्होंने ने कभी भी कोई चमत्कार किया होता या मे'राज हुआ होता या जिब्राईल अलैहिस्सलाम पवित्र क़ुर्आन लाए होते तो वह कभी अपनी नुबुव्वत पर सन्देह करने वाले न होते इस से उनका पवित्र क़ुर्आन पर और अपनी नुबुव्वत पर सन्देह करना साफ़-साफ़ सिद्ध होता है और न वह अल्लाह के रसूल हैं।

द्वितीय प्रश्न– मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कभी भी कोई चमत्कार न मिला जैसा कि सूर: अनकबूत में दर्ज है (अरबी का अनुवाद) और कहते हैं क्यों न उतरीं उस पर कुछ निशानियाँ (अर्थात कोई एक भी, क्योंकि 'ला' नकारात्मक इस आयत में जो कि जिंसी (प्रजाति) है कुल जिंस का इन्कार करता है) उसके रब्ब की ओर से। और सूर: बनी इस्राईल में भी- और हम ने रोक दीं निशानियाँ भेजनी कि अगलों ने उनको झुठलाया। इस से साफ़-साफ़ स्पष्ट है कि ख़ुदा ने कोई चमत्कार नहीं दिया। वास्तव में अगर कोई एक चमत्कार भी मिलता तो वह नुबुव्वत और क़ुर्आन पर सन्देह न करते।

तृतीय प्रश्न– यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैग़म्बर होते तो उस वक़्त के प्रश्नों के उत्तर में विवश होकर यह न कहते कि ख़ुदा को मालूम अर्थात् मुझ को मालूम नहीं और अस्हाब-ए-कहफ़ के बारे में उनकी संख्या में गलत बयानी न करते और यह न कहते कि सूर्य दलदल के स्रोत में छुपता है या डूबता है हालाँकि सूर्य पृथ्वी से नौ करोड़ गुना बड़ा है वह किस प्रकार दलदल में छुप सकता है।

(नोट – हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अब्दुल्लाह जेम्स के तीसरे प्रश्न को (संभवत: उसके महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए) दूसरा प्रश्न ठहराकर उसका उत्तर दिया है और दूसरे प्रश्न को अन्त में रखा है। जबकि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम[रज़ि॰] ने अब्दुल्लाह जेम्स के प्रश्नों के क्रम को क़ायम रखा है- प्रकाशक)

बरकतों के उतरने के स्थान, रहमानी क़ुर्आन के प्रकाशों के उदय स्थल, जनाब मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान की ओर से उत्तर

प्रथम प्रश्न का उत्तर: - ऐतिराज़ कर्ता ने पहले अपने दावे के समर्थन में सूर: बकर: में से एक आयत प्रस्तुत की है जिसके पूरे-पूरे शब्द ये हैं : اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ (अलबक़र: - 148)

इस आयत का पिछला अगला प्रसंग अर्थात् अगली पिछली आयतों के देखने से साफ़ प्रकट होता है कि यहाँ नुबुव्वत और पवित्र क़ुर्आन का कोई ज़िक्र नहीं। केवल इस बात का वर्णन है कि बैतुल मक़दस की ओर नहीं अपितु बैत-ए-का'बा की ओर मुंह फेर कर नमाज़ पढ़नी चाहिए। अत: अल्लाह तआला इस आयत में फ़रमाता है कि यह ही सच बात है अर्थात् खाना का'बा की ओर ही नमाज़ पढ़ना सच है जो प्रारंभ से निर्धारित हो चुका है और पहली किताबों में बतौर भविष्यवाणी इसका वर्णन भी है अत: तू (हे पढ़ने वाले! इस किताब के) इस बारे में सन्देह करने वालों में से मत हो[1]★ फिर इस आयत के आगे भी इसी विषय के बारे में आयतें हैं अत: फ़रमाता है

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ (अलबक़र: - 150)

अर्थात् प्रत्येक ओर से जो तू निकले तो खाना का'बा की ही ओर नमाज़ पढ़ यही तेरे रब्ब की ओर से सच है अत: साफ़ प्रकट है कि यह समस्त आयतें खाना का'बा के बारे में हैं न कि किसी अन्य ज़िक्र के संबंध में और चूंकि यह आदेश जो खाना का'बा की ओर नमाज़ पढ़ने के लिए जारी हुआ एक सामान्य आदेश है जिसमें सब मुसलमान सम्मिलित हैं इसलिए अब आदेश का सामान्य उद्देश्य कुछ भ्रम वाले स्वभावों का भ्रम दूर करने के लिए इन आयतों ने उन को सांत्वना दी गई कि इस बात से दुविधा में न हों कि पहले बैतुल मुक़द्दस की ओर नमाज़ पढ़ते-पढ़ते अब उस ओर से हटकर खाना का'बा की ओर नमाज़ पढ़ना क्यों आरंभ कर दिया तो फ़रमाया कि यह कोई नई बात नहीं अपितु यह वही निर्धारित बात है जिसको ख़ुदा तआला ने अपने पहले नबियों के द्वारा पहले ही से बता रखा था इसमें सन्देह मत करो।

दूसरी आयत में जो ऐतिराज़ कर्ता ने दावे के समर्थन में स्वयं लिखा है वह सूर: अल अनआम की एक आयत है जो अपनी सम्बन्धित आयतों सहित इस प्रकार से है

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝ (अलअनआम - 115)

अर्थात् क्या ख़ुदा तआला के अतिरिक्त मैं कोई और हकम मांगू और वह वही है जिसने तुम पर विस्तृत किताब उतारी और जिन लोगों को हम ने किताब अर्थात् क़ुर्आन दिया है अभिप्राय यह है कि जिनको हम ने क़ुर्आन का ज्ञान समझाया है वह खूब जानते हैं कि वह अल्लाह तआला की ओर से है अत: हे पढ़ने वाले! तू सन्देह करने वालों में से मत हो।

अब इन आयतों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट मालूम होता है कि सम्बोधित इस आयत के जो कि :

शेष पृष्ठ 27 पर

★**हाशिया :-** यह इस बात की ओर संकेत है कि पहली किताबों में तथा इंजील में भी का'बे की तरफ़ मुंह फेरने के बारे में बतौर भविष्यवाणी संकेत हो चुके हैं। देखो युहन्ना अध्याय 4 आयत 21-24 यसू ने उस से कहा कि हे औरत! मेरी बात को विश्वास रख वह घड़ी आती है कि जिसमें तुम न इस पहाड़ पर और न यरोशलम में बाप की इबादत करोगे।

सम्पादकीय

देश भक्ति की भावना और हमारी ज़िम्मेदारी

15 अगस्त 1947 ई, जी हाँ वही दिन जिस में हमारे भारत देश को आधिकारिक रूप से स्वतंत्रता मिली थी। अत: जब जब 15 अगस्त का यह दिन आता है पूरे देश का वातावरण देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत हो जाता है। हर ओर तिरंगा लहराते दिखाई देते हैं, सोशल मीडिया पर देश भक्ति के गीत, न्यूज़ चेनल्स पर देश भक्त और देश द्रोही की बहस तेज़ हो जाती हैं। देश भक्ति शब्द सुनते ही शरीर रोमांच से और दिल ख़ुशी से भर जाता है जैसे अचानक पतझड़ में बहार आ गयी हो । एक ऐसा जोश और ज़िम्मेदारी का भाव पैदा हो जाता है जो समय और उम्र की सीमा को तोड़कर सबमे एकरूपता का बोध कराने लगता है। जाति, वर्ग, संप्रदाय और धर्म की सारी सीमाएँ मानो टूट जाती हैं और प्रेम एवं बन्धुत्व की निर्मल धारा बहने लगती है। दिल गर्व का अनुभव करना शुरू कर देता है क्योकि देश के लिये त्याग की भावना अपने उत्कर्ष पर पहुँच जाती है फिर ज़बान पे ये शब्द अपने आप आने लगते हैं :-

जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमे रसधार नहीं,
वह ह्रदय नहीं पर पत्थर है जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं

यह सुनने, देखने, महसूस करने में बहुत अच्छा लगता है। पर जब हम सिक्के के दूसरे पहलुओं पर ध्यान करते है तब कुछ अनुत्तरित प्रश्न जैसे अपने आप मुंह खोले खड़े हो जाते हैं। उन प्रश्नों पर गौर करने से जैसे रोमांच छीड़ होना शुरू कर देता है, प्रेम एवं बन्धुत्व के निर्मल धारा जैसे मानो अपनी तीव्रता खोना शुरू कर देती है और दिल एवं दिमाग कुंद हो जाता है, पूरे का पूरा उल्लास एवं जोश स्वत: ही जैसे समाप्ति की घोषणा करना शुरू कर देता है और बड़े खेद पूर्वक मन कह उठता है कि काश! हमारे समस्त देशवासी धार्मिक, राजनीतिक तथा सांप्रदायिक मतभेद से ऊपर उठ कर प्रेम से रहें, शांति से रहें एक दूसरे की भावनाओं तथा सुख दुख का ध्यान रखें। तब जो आनंद स्वतंत्रता दिवस मनाने का आएगा उसकी बात ही निराली होगी।

युगावतार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब,संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत अपनी एक पुस्तक में देश वासियों को संबोधित करते हुए लिखते हैं:-

"हे श्रोताओ! हम सब क्या मुसलमान और क्या हिन्दू सैकड़ों मतभेदों के बावजूद उस ख़ुदा पर ईमान लाने में साझे हैं जो संसार का स्रष्टा एवं स्वामी है और इसी प्रकार हम सब मनुष्य के नाम में भागीदारी रखते हैं। अर्थात् हम सब मनुष्य कहलाते हैं तथा इसी प्रकार एक ही देश के नागरिक होने के कारण आपस में पड़ोसी हैं। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि हार्दिक शुद्धता तथा नेक नीयत के साथ परस्पर मित्र बन जाएँ और धार्मिक एवं सांसारिक संकटों में परस्पर हमदर्दी करें और ऐसी हमदर्दी करें कि जैसे एक दूसरे के अंग बन जाएँ।

हे मेरे देशवासियो! वह धर्म, धर्म नहीं है जिसमें सार्वजनिक हमदर्दी की शिक्षा न हो और न वह

इन्सान इन्सान है जिसमें हमदर्दी की भावना न हो। हमारे ख़ुदा ने किसी क़ौम से भेदभाव नहीं किया। उदाहरणतया जो-जो मानवीय शक्तियाँ एवं ताकतें आर्यवर्त की प्राचीन क़ौमों को दी गई हैं वही समस्त शक्तियाँ अरबों, फ़ारसियों, शामियों, चीनियों, जापानियों, यूरोप तथा अमरीका की क़ौमों को भी दी गई हैं। सबके लिए ख़ुदा की धरती फ़र्श का काम देती है और सबके लिए ख़ुदा का सूर्य एवं चन्द्रमा तथा कई अन्य सितारे प्रकाशमान दीपक का काम दे रहे हैं। तथा अन्य सेवाएँ भी कर रहे हैं। उसके द्वारा उत्पन्न तत्त्व अर्थात् वायु, जल, अग्नि और मिट्टी और इसी प्रकार उसकी समस्त पैदा की हुई वस्तुएँ अनाज, फल और औषधि इत्यादि से समस्त क़ौमें लाभ प्राप्त कर रही हैं। अत: ये ख़ुदाई व्यवहार हमें सीख देते हैं कि हम भी अपनी मानवजाति से सहानुभूति और व्यवहार के साथ और तंग दिल और संकीर्ण विचार न बनें।

मित्रो! निश्चित समझो कि यदि हम दोनों क़ौमों में से कोई क़ौम ख़ुदा के आचरण का सम्मान नहीं करेगी और उसके पवित्र आचरणों के विपरीत अपना आचरण बनाएगी तो वह क़ौम शीघ्र तबाह हो जाएगी और न केवल स्वयं बल्कि अपनी सन्तान को भी तबाही (विनाश) में डालेगी। जब से दुनिया पैदा हुई है समस्त देशों के सत्यनिष्ट यह गवाही देते आए हैं कि ख़ुदा के आचरण का अनुयायी होना इंसानी ज़िन्दगी के लिए अमृत है तथा मनुष्यों का शारीरिक और आध्यात्मिक (रूहानी) जीवन इसी बात से सम्बद्ध है कि वह ख़ुदा के समस्त पवित्र आचरणों का अनुसरण करे जो सुरक्षा का स्रोत हैं।"

हम सब एक ईश्वर कि संतान हैं। इंसानियत ज़िन्दाबाद का नारा हर क़ौम और धर्म वाले बड़े गर्व से लगाते हैं। मैं आप समस्त देश वासियों को हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई सभी से अनुरोध करता हूँ कि आइए धार्मिक मतभेद को भूल कर हम सब देशवासी आपस में प्रेमपूर्वक रहें। एक दूसरे के सुख-दुख में एक दूसरे का साथ दें एक दूसरे का सहारा बनें। देश की वर्तमान हालत यह है कि प्रतिदिन एक नया विवाद और झगड़ा सुनने को मिल जाता है क्या इसी दिन को देखने के लिए हमारे पूर्वजों ने देश को स्वतंत्र करवाया था? क्या इसी दिन के लिए उन्होंने अपने प्राणों का बलिदान दिया था? अगर देशवासियों ने आपस में ही लड़ना था तो बेहतर था कि अंग्रेज़ों से ही लड़ते रहते, उससे कम से कम हमारी एकता और अखंडता तो सलामत थी। आपस में प्यार था, मुहब्बत थी, अपनापन था एक दूसरे के सुखदुख के साथी थे, दिलों में दूसरे के धर्म तथा आस्था के प्रति सम्मान था। इस विषय पर विचार करने की आवश्यकता है, सोचने की ज़रूरत है कि इस आपसी लड़ाई झगड़े से नुकसान दोनों पक्षों का है, प्रेम से रहें और अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए एक बेहतर भारत छोड़ कर जाएं।

आइये इस आज़ादी के अवसर पर हम सभी अपनी ज़िम्मेदारियों को समझें और एक दूसरे से कन्धा मिलाकर देश और देश के विकास के राह में पड़ने वाले सारे अवरोधों को दूर करते हुये शांति और समृद्धि का वातावरण बनायें। समतामूलक समाज की स्थापना करते हुये एक ऐसी भूमि तैयार करें जो भविष्य की स्वर्णिम धरोहर बन जाये और आगे आने वाली पीढ़ी इससे प्रेरणा लेकर विश्वशांति के मार्गपर अग्रसर रहे जिससे इतिहास का यह कालखंड भारत को शांति सम्राट के रूप में अमर रखे।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 8.7.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के दौर में इस्लाम से विमुख होने वालों के उपद्रव तथा विद्रोह के समय भिजवाए जाने वाले अभियानों का वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में मुर्तद बाग़ियों के विरुद्ध सैन्य अभियानों के वर्णन की श्रंखला में गयारवें अभियान के विषय में फ़रमाया-

आप रज़ी. ने एक झंडा हज़रत मुहाजिर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन अबू उमय्या रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को देते हुए आदेश दिया कि वे असवद अंसी की सेना का मुक़ाबला तथा अबना की सहायता करें जिनसे क़ैस बिन मकशूह तथा जिनके साथ यमन के अन्य लोग लड़ाई में उलझे हुए थे, और हिदायत दी कि यहाँ से निपट कर कन्दा नामक क़बीले के लिए हिज्रे मौत नामक स्थान तक जाना। हज़रत मुहाजिर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन उमय्या रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हा के भाई थे। तबूक के युद्ध में पीछे रह जाने की अप्रसन्नता दूर होने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें कन्दा क़बीले का पदाधिकारी नियुक्त फ़रमा दिया किन्तु वे बीमार हो गए तथा वहाँ न जा सके तो उन्होंने ज़ियाद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि वे उनके लिए उनका काम भी पूरा करें, बाद में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें नजरान से लेकर यमन की अन्तिम सीमा तक शासक नियुक्त किया तथा युद्ध का आदेश दिया।

बुखारी की रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सपने में पहले ही बता दिया गया था कि दो झूठे नबुव्वत के दावेदार (सनआ वाला असवद अंसी, यमामा वाला मुसैलमा कज़्ज़ाब) प्रकट होंगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईरान के बादशाह किसरा को इस्लाम में निमंत्रण का पत्र लिखा तो उसने अति क्र ोधित होकर अपने आधीन यमन के कार्य-कर्ता बाज़ान को आदेश दिया कि वे उस

व्यक्ति (रसूलुल्लाह स.) का सिर लेकर दरबार में पहुंचे। उसने दो आदमी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ रवाना किए परन्तु आप स. ने फ़रमाया- मेरे अल्लाह ने मुझे बताया है कि तुम्हारे बादशाह को उसके बेटे शेरोविय: ने मार डाला है तथा उसके स्थान पर स्वयं बादशाह बन बैठा है तथा साथ ही बाज़ान को दावते इस्लाम दी और फ़रमाया- यदि वह इस्लाम क़बूल कर लेगा तो उसे पहले की भांति यमन का निगरान रखा जाएगा। यह सुन कर दोनों व्यक्ति वापस चले गए, बाज़ान को पूरी बात बताई तथा उसी समय बाज़ान को यह सूचना भी मिल गई कि वास्तव में ऐसा हुआ है। बाज़ान ने जब इस बात को पूरा होते हुए देख लिया तो उसने इस्लाम की दावत क़बूल कर ली और आप स. ने उसे यमन का हाकिम बनाए रखा। बाज़ान का जब देहान्त हो गया तो उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अमीरों को यमन के विभिन्न इलाक़ों पर निगरान नियुक्त फ़रमाया, यमन के उत्तरी भाग में रहने वाले धर्म गुरु असवद ने छल कपट तथा तुक बन्दी वाले वार्तालाप के कारण बड़ी जल्दी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया तथा नबुव्वत का दावा भी कर दिया जिस पर भोले भाले तथा मूर्ख लोगों की बड़ी संख्या उसके आस पास एकत्र हो गई। वास्तव में उसने यह नारा भी लगाया कि यमन केवल यमनियों का है, तो यमन के निवासी राष्ट्रवाद के इस नारे से बड़े प्रभावित हुए। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- यह नारा बड़ा पुराना है, आज भी यही लगाया जाता है और दुनिया में जो फ़साद फैला हुआ है, इसी कारण से है।

जब ये चिंता जनक सूचनाएँ मदीना पहुंचीं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौता के युद्ध में शहीद होने वालों का बदला लेने तथा उत्तर की ओर से हमलों की रोक थाम के लिए हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की सेना को तय्यार करने में व्यस्त थे। आप स. ने यमन के सरदारों के नाम पैगाम भेजा कि वे अपने तौर पर असवद का मुक़ाबला जारी रखें और जैसे ही उसामा रज़ी. की सेना विजयी होकर लौटे तो उसे यमन की ओर रवाना कर दिया जाएगा।

इसी बीच हिज्रे मौत तथा यमन के मुसलमानों की ओर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पत्र पहुंचा जिसमें असवद अंसी के साथ युद्ध करने का आदेश दिया गया था अत: इस उद्देश्य के लिए हज़रत मुआज़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन जबल खड़े हुए और उससे मुसलमानों के दिल मज़बूत हो गए। जिशनिस (जुशीश) देलमी कहते हैं कि वबर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन युहन्नस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पत्र लेकर हमारे पास आए जिसमें आप स. ने आदेश दिया था कि हम अपने दीन पर क़ायम रहें तथा लड़ाई या किसी अन्य बहाने से असवद के विरुद्ध सैन्य काररवाई करें तथा आप स. के पैगाम को उन लोगों तक भी पहुंचाएँ जो इस समय इस्लाम पर अटल आस्था तथा दीन के समर्थन के लिए तय्यार हों। हमने इसके अनुसार किया किन्तु हमने देखा कि असवद के मुक़ाबले पर सफल होना बड़ा कठिन है।

जिशनिस देलमी बयान करते हैं कि हमें एक बात की जानकारी हुई कि असवद तथा अमरू बिन अदी करब के भान्जे क़ैस बिन अब्दे यगूस बिन मकशूह के बीच कुछ रंजिश हो चुकी थी अत: हमने सोचा

कि क़ैस को अपनी जान का भय है। हमने उसे इस्लाम की दावत दी तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सन्देश पहुंचाया तो उसे ऐसा लगा कि मानो हम आसमान से उतरे हैं इस लिए उसने तुरन्त हमारी बात मान ली तथा हमने अन्य लोगों के साथ भी पत्राचार किया, विभिन्न क़बीलों के सरदार भी असवद के मुक़ाबले के लिए तय्यार हो चुके थे। इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजरान के समस्त वासियों को असवद की मामले के बारे में लिखा, उन्होंने आप स. की बात मान ली। जब यह ख़बर असवद तक पहुंची तो उसे अपना विनाश दिखाई देने लगा।

जिशनिस देलमी को एक युक्ति सूझी, वे असवद की पतनी आज़ाद के पास गए तथा असवद के हाथों उसके पहले पति हज़रत शहर रज़ी. बिन बाज़ान की शहादत, उसके वंश के अन्य लोगों के विनाश तथा कुटुम्ब को पहुंचने वाले अपमान एवं अत्याचार याद दिलाए तथा उसे असवद के विरुद्ध अपनी सहायता करने के लिए कहा तो वह बड़ी ख़ुशी से तय्यार हो गई। अन्तत: एक सुदृढ़ योजना तथा आज़ाद के समर्थन के साथ असवद अंसी को एक रात उसके महल में दाखिल होकर मार दिया गया। इस तरह यह फ़ितना तीन महीने तक तथा एक कथन के अनुसार लगभग चार महीने तक भड़क कर ठंडा हो गया।

तत्पश्चात सनआ में पहले की भांति मुसलमानों का शासन स्थापित हो गया परन्तु यमन में एक बार फिर विद्रोह उठा, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त का चर्चा हुआ तो सुधरते हालात फिर ख़राब हो गए। बहादुर, योग्य तथा राष्ट्रीय पक्षपात से परिपूर्ण क़ैस बिन अब्दे यगूस अब फिर इस्लाम के आधीन रहने से विमुख हो गया। यमन में फ़ारसियों का शासन उसे सदैव खटकता रहता था, उसके नष्ट होने के बाद वह अबना की समृद्धि, उनकी सामूहिक एवं आर्थिक प्रगति को धूल में मिलाना चाहता था। एक सफल सेनापति वह पहले ही था, उसने असवद की सेना के लीडरों से बात करके साथ मिलकर षड्यन्त्र किया तथा अबना को देश से निकालने की योजना बना ली। फ़िरोज़ तथा दाज़ूयह दोनों से उसने सम्बंध ख़राब कर लिए, दाज़ूयह को धोखे से मार डाला जबकि फ़िरोज़ बाल बाल बच गया। फ़िरोज़ ने हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु को अपनी तथा अबना की वफ़ादारी से अवगत करके निवेदन किया कि हमारी सहायता कीजिए, हम इस्लाम के लिए हर एक क़ुर्बानी करने को तय्यार हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के द्वारा बनाए गए गयारह सैन्य दलों में से सबसे अंत में आप रज़ी. की सेना मदीना मुनव्वरह से यमन के लिए रवाना हुई, रास्ते में विभिन्न क़बीलों के लोग आप रज़ी. की सेना में शामिल हुए और यह काफ़ी बड़ी सेना आगे बढ़ती चली गई।

द्वित्तीय ख़ुत्ब: से पहले हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह ने अमरू बिन मअदी करब और क़ैस बिन मकशूह की गिरफ़तारी, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. की सेवा में पेश किए जाने, उनसे होने वाली पूछ ताछ, क्षमा तथा स्वतंत्रता तथा उनके क़बीलों के हवाले किए जाने तथा भविष्य में उनकी रिहाई के परिणाम स्वरूप घटित होने वाले प्रभाव का वर्णन फ़रमाया।

☆ ☆ ☆

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक काव्य रचना

सराए ख़ाम*

दुनिया की हिरसो आज़[1] में क्या कुछ न करते हैं,
नुक़्साँ जो एक पैसा का देखें, तो मरते हैं।।

ज़र[2] से प्यार करते हैं और दिल लगाते हैं,
होते हैं ज़र के ऐसे, कि बस मर ही जाते हैं।।

जब अपने दिलबरों को न जल्दी से पाते हैं,
क्या क्या न उनके हिज्र में आँसू बहाते हैं।।

पर उन को उस सजन की तरफ़ कुछ नज़र नहीं,
आँखें नहीं हैं कान नहीं दिल में डर नहीं।।

उन के तरीक़ो[3] धर्म में गो लाख हो फ़साद,
कैसी ही हो इयाँ[4] कि वो है झूठ एतकाद[5]।।

पर तब भी मानते हैं उसी को बहर[6] सबब,
क्या हाल कर दिया है तअस्सुब[7] ने, है ग़ज़ब।।

दिल में मगर यही है कि मरना नहीं कभी,
तर्क[8] इस इयाल[9] को औम को करना नहीं कभी।।

ऐ ग़ाफिलाँ वफ़ा न कुन्द ई सराए ख़ाम,
दुनियाए दूँ नमानद् व नमानद् ब कस मुदाम★।।

(सुरमा चश्मा आर्या पृ. 89, प्रकाशन 1886 ई. रूहानी ख़ज़ायन भाग 2 पृ.137)

---

*सराए ख़ाम- नश्वर संसार। 1. लोभ लालसा। 2. धन। 3. मार्ग। 4. प्रकट। 5. विश्वास। 6. बिना कारण। 7. ईर्ष्या। 8. छोड़ना 9. ख़ानदान। हिज्र- जुदाई

★ ऐ अज्ञानियो ! ये नश्वर संसार किसी का साथ नहीं देता
ये संसार किसी के साथ सदैव न रहा है न रहेगा।

राष्ट्र के प्रमुखों के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का व्यवहार

(मुहम्मद इनाम ग़ौरी, नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान)

भाषण जलसा सालाना क़ादियान 2021 ई

अनुवादक- सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद एम ए

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا (सूरः अल् निसा : आयत : 59)

अनुवाद : निसंदेह अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम अमानतें उनके हक़दारों के सपुर्द किया करो और जब तुम लोगों के मध्य हुकूमत करो तो इन्साफ़ के साथ हुकूमत करो। निसंदेह बहुत ही उम्दा है जो अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है। निसंदेह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहरी नज़र रखने वाला है।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ (सूरः अल् हज आयत : 42)

अनुवाद : ये वे लोग हैं कि अगर हम उनको दुनिया में ताक़त बख़्शें तो वे नमाज़ों को क़ायम करेंगे और ज़कात देंगे और नैक बातों का हुक्म देंगे और बुरी बातों से रोकेंगें और सब कामों का अंजाम ख़ुदा के हाथ में है।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ۝ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى (सूरः ताहा आयत 119 से 120)

अनुवाद : तेरे लिए निर्धारित है कि न तू इस में भूखा रहे और न नंगा। और यह भी कि न तो इस में प्यासा रहे और न धूप में जले।

इन तीन आयात में जिनकी विनीत ने तिलावत की और अनुवाद पेश किया है उनमें किसी भी रियासत के अवाम और हुक्काम चाहे वे किसी तर्ज़-ए-हुकूमत से ताल्लुक़ रखने वाले हों, दोनों के लिए स्पष्ट पैग़ाम और लाहे अमल दिया गया है।

अवाम के लिए यह नसीहत फ़रमाई गई है कि इंतेख़ाबात का जमहूरी अमल पूर्णतः दयानतदारी पर आधारित होना चाहिए। ऐसे हाकिम चुनने या नामकरण करने की दयानतदारी वाली कोशिश होनी चाहिए जो न केवल ईमानदार हों बल्कि क़ौमी ज़िम्मेदारी को अदा करने के अहल भी हों और जब हुकूमत क़ायम हो जाएगी तो राष्ट्राध्यक्ष की यह ज़िम्मेदारी है कि कामिल अदल और इंसाफ के साथ बिना भेद भाव धर्म, ज़ात, रंग और नस्ल के प्रजा के हुक़ूक़ की अदायगी की कोशिश करें।

लोगों के हुक़ूक़ में से मुक़द्दम तौर पर बुनियादी ज़रूरियात की फ़राहमी का इंतिज़ाम करना है और कम से कम बुनियादी आवश्यकता ये हैं कि कोई फ़र्द भूखा न रहे और पीने का साफ़ पानी मुहय्या करने की कोशिश की जाए और तन ढाँकने के लिए लिबास और रहने के लिए हुकूमत के वसायल के अनुसार मकान मुहय्या किया जाए। और इस ग़रज़ के लिए इस्लाम ने ज़कात और जिज़या का निज़ाम जारी किया है।

इसके बाद हुकूमत का फ़र्ज़ है कि लोगों के अक़ीदा और मसलक के अनुसार उन्हें इबादत करने

की आज़ादी दी जाए और मसाजिद, गिरजे और मदिरों आदि का सम्मान और सुरक्षा का इंतिज़ाम किया जाए और ऐसा समाज बनाने की कोशिश की जाए जिसमें लोग अपने आपको और दूसरों को भी हुस्न-ए-सुलूक और अख़लाक़ और इन्साफ़ की नसीहत करते रहने के आदी हो जाएं और अपने आपको और दूसरों को समस्त नापसंदीदा उमूर् से चाहे संसारिक हों या धार्मिक, अख़लाक़ी हूँ या मआशी या इक़तेसादी रोकने की कोशिश करते रहें।

इस मुख़्तसर तमहीद (भूमिका) के बाद अब सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक रियासत के सरबराह होने के लिहाज़ से क्या उदाहरण था उस का जायज़ लेने के लिए मदीना मुनव्वर: की रियासत पर एक तायराना नज़र डालते हैं।

नुबुव्वत के दावा के बाद पवित्र मक्का में अत्यधिक कठिनाईयों वाला भरपूर (13) वर्ष गुज़ारने और फिर अल्लाह तआला के हुक्म से यसरब की तरफ़ हिज्रत करने का वाक़िया पेश आया। और मदीना पहुंचने के बाद जो सबसे पहली फ़िक्र आपको हुई वह बाजमाअत नमाज़ों की अदायगी के लिए मस्जिद के निर्माण के विषय में थी। इसलिए पहले तो "कुबा" स्थान पर जहां आपका कुछ दिन क़ियाम रहा पहली मस्जिद वहां तामीर की और फिर मदीना में वुरूद-ए-मसऊद के साथ दो यतीम लड़कों से ज़मीन ख़रीद कर मस्जिद नब्वी की बुनियाद रखी और अत्यन्त सादा लेकिन वसीअ और अरीज़ मस्जिद खजूर की टहनियों की छत वाली तामीर करवाई। इस तरह اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ के इरशाद बारी तआला की तामील में नमाज़ बाजमाअत के क़ियाम का इंतिज़ाम फ़रमाया और फिर रियासत मदीना के व्यवस्था को सँभालने की तरफ़ तवज्जा फ़रमाई।

याद रखना चाहिए कि मदीना की रियासत भी कोई फूलों की सेज नहीं थी और न हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां के अवाम की अक्सरियत के वोटों से जीत कर मदीना की रियासत के सरबराह बने थे बल्कि चंद गिनती के मुरीदान बावफ़ा थे जो इस्लाम के पैग़ाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ फाज़िला से प्रभावित हो कर यसरब तशरीफ़ लाने की दरख़ास्त कर रहे थे और दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला की इच्छा इस बस्ती को मदीन्तुर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बनाने में कारफ़रमा थी। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बेसर-ओ-सामानी की हालत में छुपते छुपाते अपने एक साथी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के हमराह वहां वरूद फ़र्मा हुए थे। लेकिन अल्लाह तआला ने यसरब के चंद अंसार के दिलों में ऐसी मुहब्बत और ऐसी जानसारी के जज़बात पैदा कर दिए कि प्रत्येक कोई इच्छा रखता था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे घर को बरकत बख़्शें। फिर कुछ ही अरसे में मक्का से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहल-ए-बैत और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो हिज्रत करके मदीना आ पहुंचे। सबसे पहले इन मुहाजेरीन का जो अपना माल वा असबाब छोड़कर ख़ाली हाथ पहुंच रहे थे उनकी आबादकारी का मसला था जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक परदेसी की हैसियत में वहां वरूद फ़र्मा हुए थे और कोई हुकूमत थी न कोई ख़ज़ाना या बैतुल माल साथ था। इन न मसायद हालात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह पुरहिकमत

कारवाई फ़रमाई कि मक्का के एक-एक मुहाजिर का मदीना के एक-एक अंसार के साथ भाईचारे का रिश्ता क़ायम फ़रमाया। यह भाईचारा ऐसा मिसाली रिश्ता साबित हुआ कि कुछ अंसार ने अपने मुहाजिर भाई को कह दिया कि यह मेरा माल और सम्पत्ति है इसमें आधा तुम्हारा हिस्सा है और इख़लास और प्रेम में यहां तक पेशकश कर दी कि मेरी दो पत्नियाँ हैं एक को मैं तलाक़ देता हूँ, इद्दत गुज़रने के बाद तुम इस से शादी कर लेना लेकिन इस मुहाजिर भाई ने कहा तुम्हारा माल और सम्पत्ति और परिवार तुम्हारे लिए मुबारक हो। मुझे केवल बाज़ार का रस्ता बता दो और कुछ रक़म क़र्ज़ दे दो। इसलिए फिर जल्द ही न केवल वे अपने पैरों पर खड़े हो गए बल्कि औरों के भी सहारा बनने के काबिल बन गए। यह तो थे मदीना के मुसलमान सहाबा जो अंसार कहलाते थे और मक्का के मुसलमान सहाबा जो मुहाजिर कहलाते थे उनके मध्य एकता और प्रेम की मिसाली और पुरहकमत कार्रवाई का संक्षिप्त वर्णन।

अब आगे देखते हैं इस रियासत में और कौन कौन सी कौमें और क़बायल आबाद थीं उनको साथ मिलाने और एकता पैदा करने और एक निज़ाम के अधीन करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या उपाए इख़तेयार किया मदीना में इस वक़्त यहूद के तीन क़बायल बनू क़ेनक़ा। बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा मुक़ीम थे। दो क़बायल बुत परस्तों के ओस और ख़ज़रज मौजूद थे।

इन पांचों क़बायल में नज़म व नसक़ नाम की कोई चीज़ नहीं थी। खासतौर पर यहूद के तीन क़बायल आज़ाद और ख़ुद-मुख़्तार रंग में अलग-अलग क़िलों में रिहाइश रखते थे।

दूसरी तरफ़ क़ुरैश-मक्का आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अक्सर आप के साथियों के मदीना हिज्रत कर जाने और मदीना में मुसलमानों के ताक़त पकड़ जाने की वजह से पेचोताब खा रहे थे और अपनी ताक़त इकट्ठा करने में लगे हुए थे कि जब भी अवसर मिले मदीना पर हमला-आवर हो कर मुसलमानों को वहां से भी बेदख़ल करने में कामयाब हो जाएं।

अत: अंदरून और बैरून मदीना के यह हालात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए चाहे वे अंसार हों या मुहाजिर सुख चैन वाले नहीं थे यहाँ तक कि ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो भी आराम की नींद नहीं सो सकते थे जबकि कम से कम अंदरून रियासत मुसलमानों और अन्य ग़ैर मुस्लिम क़बायल विशेषता यहूद के क़बायल के साथ सुलह और अमन के माहौल में रहने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दूर-अँदेश निगाह ने एक तहरीरी मुआहिदा करना ज़रूरी समझा जिसकी शरायत कुछ इस तरह थीं कि :

(1) मुसलमान और यहूदी आपस में हमदर्दी और इख़लास के साथ रहेंगे और एक दूसरे के ख़िलाफ़ ज़्यादती या ज़ुलम से काम नहीं लेंगे।

(2) प्रत्येक क़ौम को मज़हबी आज़ादी हासिल होगी।

(3) समस्त शहरियों की जान और माल महफ़ूज़ होंगे

(4) हर किस्म के इख़तेलाफ़ और झगड़ों के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रुजू करेंगे और प्रत्येक का फ़ैसला उस क़ौम की अपनी शरीयत के अनुसार किया जाएगा

(5) अगर यहूदियों या मुसलमानों के ख़िलाफ़ कोई क़ौम जंग करेगी तो यहूद और मुसलमान एक दूसरे की हिमायत और इमदाद के लिए खड़े होंगे

(6) अगर मदीना पर कोई हमला होगा तो सब मिल कर उस का मुक़ाबला करेंगे

(7) क़ुरैश-ए-मक्का और उन के सहायक को यहूद की तरफ़ से किसी किस्म की सहायता या पनाह नहीं दी जाएगी

(8) कोई फ़रीक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इजाज़त के बग़ैर जंग के लिए नहीं निकलेगा

(9) इस मुआहिदा के अनुसार कोई ज़ालिम या फ़सादी सज़ा से या इंतिक़ाम से महफ़ूज़ नहीं होगा।

जबकि बाद के वाक़ियात ज़ाहिर करते हैं कि वर्णित यहूदी क़बायल कुछ मुआहिदात की ख़िलाफ़वरज़ी के मुर्तक़िब होते रहे और क़बीला ओस और ख़ज़रज के कुछ मुशरेकीन ने मुसलमानों के साथ रहने में आफ़ियत समझ कर बज़ाहिर इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन उनके दिलों में ईमान ने झांक कर भी नहीं देखा था बल्कि यह प्रत्येक नाज़ुक अवसर पर अपनी मुनाफ़क़त का रंग दिखाते रहे जबकि इस मुआहिदा की दृष्टि से मुसलमानों और यहूदियों के बाहमी ताल्लुक़ात मज़बूत हो गए और मदीना में एक किस्म की मुनज़्ज़म हुकूमत की बुनियाद क़ायम हो गई जिसके सरबराह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क़रार पाए।

अत: ऐसे न मुसायद हालात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमका अत्यन्त पुरहिकमत तरीक़ पर रियासत-ए-मदीना का नज़म व नसक़ सँभालना और फिर अपने आला अख़लाक़ और रवादारी और मुसावात और कामिल अदल और इंसाफ के ज़रीये मदीना मुनव्वरा को एक मिसाली रियासत देना आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ऐसा काबिल-ए-तक़लीद नमूना है जो हर उस सरबराह के लिए भी जो अपने ही मुल्क में अपने ही अवाम की अक्सरियत के इत्तिफ़ाक़ राय से मुंतख़ब या नामज़द हो गया हो एक मार्गदर्शक की हैसियत रखता है।

अब विनीत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी सीरत-ए-तय्यबा के हवाले से यह वर्णन करना चाहता है कि क़त-ए-नज़र आपके रुहानी मर्तबा और स्थान के, वे कौन से ख़ास उमूर हैं जिनकी वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक मक़बूल और कामयाब मुल्क के लीडर नज़र आते हैं और कुछ बागियों और मुनाफ़िक़ों को छोड़ कर इस रियासत के अवाम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अपनी जानें निछावर करने में फ़ख़र महसूस करते हैं।

सबसे पहली ख़ुसूसीयत जो उभर कर सामने आती है वह मज़हबी आज़ादी और रवादारी है। विशेषता एक ऐसी रियासत जिसमें मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और मसलकों से ताल्लुक़ और अक़ीदत रखने वालों की हो, वहां प्रत्येक को अपने अक़ीदा और मसलक के इज़हार और पुर अमन तब्लीग़ और इस पर अमल पैरा होने की आज़ादी हो और किसी को कष्ट देने की किसी को इजाज़त नहीं हो। इसलिए जैसा कि वर्णन हो चुका है मदीना में जहां ख़ुदा ए वाहिद लाशरीक और हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने और क़ुरआन शरीयत पर अमल करने वाले मुसलमान थे वहां मूसवी शरीयत तौरात पर अमल करने वाले यहूदी और कुछ हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम के मानने वाले ईसाई और बुत परस्त

मुशरक अक़्वाम भी थीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके साथ जो मुआहिदात फ़रमाए थे इसके अनुसार अमलदरआमद करते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रत्येक को मज़हबी आज़ादी दे रखी थी और एक मुस्लिमा सरबराह होने की हैसियत से जिस मज़हब से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों के झगड़ों आपके सामने पेश होते उनकी अपनी शरीयत और अक़ीदा के अनुसार उनके फ़ैसले फ़रमाते थे। क़ुरआन-ए-करीम ने तो यहां तक फ़रमाया है कि जो लोग अल्लाह के सिवा और हस्तीयों और चीज़ों की पूजा करते हैं तुम उन को भी बुरा मत कहो अन्यथा वे भी दुश्मनी की राह से नादानी में अल्लाह को गाली देंगे। (सूरः अल् ईनाम आयत : 109)

मुशरेकीन-ए-मक्का ने ग़ज़व-ए-उहद के अवसर पर मुसलमान शुहदा की लाशों की बे हुरमती की थी और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का कलेजा तक चबाया गया था। परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कभी इस का बदला लेने का नहीं सोचा बल्कि हमेशा उन के साथ अच्छा व्यवहार ही किया। हज़रत हसन बिन असवद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि एक ग़ज़वा के अवसर पर मक़्तूलीन में कुछ बच्चों के देह भी पाए गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब पूछताछ की तो एक व्यक्ति ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! वे मुशरिकों के बच्चे ही तो थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, आज तुम में से जो बेहतरीन लोग हैं वे भी कल मुशरिकों के बच्चे ही तो थे। याद रखो कोई भी बचा जब पैदा होता है तो नेक फ़ित्रत पर पैदा होता है। इसके बाद उसके माँ बाप उसे यहूदी या ईसाई बना देते हैं। (मस्नद अहमद बिन हंबल, भाग 6 पृष्ठ 24 बेरूत)

दूसरी अहम ख़ुसूसीयत एक मुल्क के लीडर की हैसियत से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कमाल अदल और इंसाफ का वह तरीक़ है जो संसार में शन्ति का गवाह है। आज जिस क़दर भी दुनिया में बेचैनी और बदअमनी नज़र आती है इस का बड़ा सबब अदल और इंसाफ का फ़ुक़दान है। इस्लाम तो केवल अपनों से नहीं बल्कि ग़ैरों और दुश्मनों के साथ भी अदल और इंसाफ का सुलूक करने की तालीम देता है और इस बारे में हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत-ए-तीयबा बेमिसाल नमूनों से मुज़य्यन है। वक़्त की रियायत से केवल दो वाक़ियात पेश करूँगा।

जिन अक़्वाम के अख़लाक़ खराब होने लगते हैं इन में एक तरफा इंसाफ और बे इंसाफ़ी राह पाने लग जाती है। और यह रिवाज आम हो जाता है कि बड़े लोग तो क़ानून के ख़िलाफ़ अमल करके भी बच जाते हैं और केवल गरीब और बेसहारा लोग ही सज़ा पाते हैं लेकिन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समस्त संसार के लिए रहमत और रऊफ़ और रहीम होने के बावजूद अहकाम-ए-शरीयत के नफ़ाज़ में बेहद ग़ैरत रखते और अदल और इंसाफ को कभी भी हाथ से नहीं जाने देते थे। इसलिए बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यह रिवायत दर्ज है कि :

"क़बीला बनी मख़्ज़ूम की फ़ातिमा नामी एक औरत ने चोरी की इस पर लोगों ने चाहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में इस औरत के मुआमले में नरमी की सिफ़ारिश की जाए इसलिए उसामा बिन ज़ैद जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बहुत लाडले और प्यारे थे उनको

तैयार किया और उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में नरमी की दरख़ास्त कर दी। हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस अमर को बहुत बुरा मनाया और ग़ुस्सा से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का चेहरा मुबारक लाल हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"बनी इसराईल की आदत थी कि जब उनमें कोई शरीफ़ चोरी करता तो उसे छोड़ देते परन्तु जब कोई ग़रीब चोरी करता तो उसके हाथ काट देते थे। परन्तु मेरा यह हाल है कि उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काट देता।"

اَللّٰھم صلِّ علیٰ محمّدٍ وّاٰل محمّد وبارِك وسلِّم

दूसरा वाक़िया यूं है कि जंग बदर में मुशरेकीन मक्का के क़ैदियों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। क़ैदियों की निगरानी जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द हुई तो उन्होंने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो समेत सब क़ैदियों की मुशकें अच्छी तरह कस दीं जो मस्जिद नब्वी के अहाते में ही थे। जिससे हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कराहने लगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अपने चचा के कराहने की आवाज़ सुनी तो बेचैन और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नींद उड़ गई। अंसार को किसी तरह इस का इलम हो गया तो उन्होंने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की मुशकें ढीली कर दीं जिसकी वजह से उनका कराहना बंद हो गया इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़त फ़रमाया कि अब्बास के कराहने की आवाज़ क्यों नहीं आरही? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तकलीफ़ के ख़्याल से उनकी रस्सियाँ ढीली कर दी हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह तो इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात है। या तो बाक़ी क़ैदियों की रस्सियाँ भी ढीली कर दो या फिर अब्बास की रस्सियाँ भी कस दो। इस पर सहाबा ने समस्त क़ैदियों की रस्सियाँ ढीली कर दीं।

फिर एक ख़ुसूसीयत यह सामने आती है कि हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने उच्च आचरण से ये अहम नुकता भी समझाया कि एक कामयाब क़ायद एक कामयाब सरबराह के लिए ज़रूरी है कि वे प्रत्येक नाज़ुक मरहला पर क़ौम की रहनुमाई के लिए हर समय तैयार रहे और जिस हद तक सम्भव हो अवसर पर पहुंच कर रहनुमाई करे और क़ौम की हौसला-अफ़ज़ाई करे इस सिलसिले में केवल एक वाक़िया पेश करता हूँ।

ग़ज़वा ख़ंदक़ के अवसर पर हिफ़ाज़ती और जंगी नुक़्ता नज़र से मदीना के इर्दगिर्द ख़ंदक़ खोदी जा रही थी। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की हालत यह थी कि भूख की तकलीफ़ को कम करने की उद्देश्य से पेट पर पत्थर बाँधे हुए थे। खुदाई के दौरान एक चट्टान टूट नहीं रही थी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में सूरत-ए-हाल पेश करके रहनुमाई चाही। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौरन अवसर पर जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी भूख की शिद्दत को

कम करने के लिए अपने पेट पर दो पत्थर बाँधे हुए थे इस हालत में भी आपने कुदाल अपने हाथ में लेकर उस चट्टान को तीन मार लगाकर टुकड़े टुकड़े कर दिया। और ख़ुदा की क़ुदरत कि इस कमज़ोरी और बेसर-ओ-सामानी के आलम में अल्लाह तआला ने प्रत्येक मार पर इर्दगिर्द की महान सल्तनतों पर मुसलमानों के ग़लबा का नज़ारा दिखाया और प्रत्येक मार पर अल्लाहु-अकबर का नारा बुलंद करके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़ुशख़बरी सुनाई कि शाम और ईरान और सना और यमन के महलों की चाबियाँ मुझे अता की गई हैं।

इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अपनी ज़िंदगी में इस्लाम जज़ीर-ए-अरब में ग़ालिब आ चुका था और आपके विसाल के (9) साल के अंदर अंदर सारे अरब पर मुसलमानों की बादशाहत क़ायम हो चुकी थी।

एक और अहम ख़ुसूसीयत यह उभर कर सामने आती है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रियासत मदीना के सरबराह बनने से पहले और बाद की ज़िंदगी में कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आता। मक्का ज़िंदगी की कसमपुर्सी और बेसर-ओ-सामानी के ज़माना में जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का रहन सहन था, मदीना के बादशाह बन जाने के बाद भी इस में कोई तबदीली नज़र नहींआती। जबकि एक तरफ़ ईरानी हुकूमत के सरबराहान की शानोशौकत और रोब दबदबा समस्त एशिया पर क़ायम था और दूसरी तरफ़ रूमी हुकूमत अपने पश्चिमी प्रभाव और विलासिता का नमूना पेश कर रही थी और उन प्रत्येक दो प्रभावी हुकूमतों के मध्य ख़ुद अरब के क़बायल भी ग़ुलामों की ख़ादिमाना जी हुज़ूरी में अपनी बिसात से बढ़कर अपनी रईसाना शान को ज़ाहिर करने की कोशिश करते रहते थे।

ऐसे माहौल में हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इंतिहाई सादा और बेतकल्लुफ़ ज़िंदगी में कोई बदलाव नज़र नहीं आता बल्कि अपने साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो और मदीना की प्रजा की ख़ुशहाली और उन की हालत को बेहतर से बेहतर बनाने की फ़िक्र में अपनी ज़ात और अपने परिजनों पर मज़ीद तंगियाँ वारिद फ़रमाते रहे। घर के काम काज के लिए कोई नौकर नहीं रखा और ख़ुद ही सब काम कर लेते थे इसलिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सवाल किया गया कि करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर में क्या करते थे आपने उत्तर दिया: يَكُوْنُ فِيْ مِهْنَةِ اَهْلِهٖ فَاِذَا حَضَرَتِ الصَّلٰوةُ خَرَجَ اِلَى الصَّلٰوةِ अर्थात घर में अपनी पत्नी के कामों में हाथ बटाते और जब नमाज़ का वक़्त आ जाता तो नमाज़ के लिए बाहर चले जाते। (बुख़ारी, किताब अस्सलात)

कैसा बेमिसाल नमूना है क्या कोई इन्सान ऐसा पेश किया जा सकता है जिसने बादशाह हो कर यह नमूना दिखाया हो कि अपने घर के काम काज के लिए एक नौकर भी न रखा हो जबकि मुल्क-ए-अरब का बादशाह हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाखों रुपया और मवेशियों के रेवड़ के रेवड़ जरूरतमंदों में तक़सीम फ़रमाते रहे। एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास सत्तर हज़ार दिरहम आए एक और रिवायत में (90) हज़ार दिरहम का वर्णन मिलता है। ये दिरहम आपने चटाई पर रखवाए और बांटने के लिए खड़े हुए और उन को तक़सीम करके ही दम लिया। (الوفاء باحوال المصطفیٰ ابن الجوز صفحہ ۴۴۷)

एक दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक व्यक्ति आया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बकरियों से भरी एक वादी उसे अता फ़र्मा दी। उस नए मुस्लिम ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वादी के मध्य की ज़मीन का भी मुतालिबा किया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़मीन की चरागाहें और बकरियों के रेवड़ समेत सब कुछ उसे भेंट कर दिया। वह व्यक्ति अपनी क़ौम में वापस लौटा तो कहने लगा हे मेरी क़ौम तुम सब मुसलमान हो जाओ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो इतना देते हैं कि भूख प्यास और गरीबी से कभी नहीं डरते। (مجمع الزوائد هیثمی حصه ۹ صفحه ۱۳)
परन्तु अपनी ज़ात और अपने अहल-ए-बैत को क़ौमी खज़ाने से लाभ प्राप्त करने से हमेशा रोके रखा। यहाँ तक कि एक मर्तबा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नवासे हज़रत इमाम हुसैन छोटी उमर के थे खजूर की ढेर में से एक दो खजूरें उठा कर मुहं में डाल कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़ौरन अपनी उंगली उन के मुख में डाल कर वे खजूरें निकाल दीं और फ़रमाया नहीं बेटे ये सदक़ा की खजूरें हैं और सदक़ा हमारे लिए जायज़ नहीं।

और घर की हालत यह थी कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है उन्होंने अपने भांजे हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया "हे मेरे भांजे हम लोग तो देखा करते थे चाँद के बाद चाँद यहाँ तक कि तीन तीन चाँद देख लेते अर्थात् दो दो माह गुज़र जाते परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घर में आग नहीं जलती थी। हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने कहा हे ख़ाला फिर आप लोग क्या खाते थे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उत्तर दिया कि इस अर्थात् खजूर और पानी से गुज़ारा किया करते थे। हाँ इतनी बात थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्दगिर्द अंसार हमसाया थे और उनके पास दूध वाली बकरियां वे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनका दूध बतौर भेंट भिजवा दिया करते थे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमें पिला दिया करते थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चहेती बेटी सय्यदतुन निसा हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का यह हाल था कि घर में चक्की पीसते आपके हाथों में छाले पड़ जाते थे जब पता लगा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास कुछ ग़ुलाम आए हैं तो उन्होंने ख़ाहिश की कि एक ग़ुलाम उन्हें भी दे दिया जाए ताकि घर के काम काज में कुछ सहूलत हो जाएगी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात के वक़्त अपनी बेटी और दामाद के पास पहुंचे और उनके मध्य बिस्तर पर ही बैठ कर अत्यन्त प्यार से समझाया कि मैं तुम्हें कोई ऐसी बात न बता दूं जो इस चीज़ से जिसका तुमने सवाल किया है बेहतर है और वह यह है कि जब तुम अपने बिस्तरों पर लेट जाओ तो 33 मर्तबा सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा अलहमदु लिल्लाह और 34 मर्तबा अल्लाहु-अकबर का विर्द करो यह तुम्हारे लिए ख़ादिम से बेहतर होगा।

और यह बात काबिल-ए-ज़िक्र है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास केवल क़ौमी ख़ज़ाना का रुपया ही नहीं रहता था कि जिसमें से अपनी ज़ात और परिवार वालों पर ख़र्च करना गुनाह समझते थे बल्कि ख़ुद आपकी ज़ात के लिए भी आपके पास बहुत माल आता था और साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो अपने इख़लास और इशक़ के सबब बहुत से भेंट पेश करके दरख़ास्त और ख़ाहिश करते

थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे अपनी ज़ात और परिजनों के लिए इस्तिमाल करें अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस ख़्याल से कि आपके बाद आपके परिजन किस तरह गुज़ारा करेंगे माक़ूल रक़म और जायदाद जमा कर जाते तो भी कोई एतराज़ वाली बात न थी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विसाल के वक़्त आपके घर की जो हालत थी उसका नक़्शा अम्र बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा की इस रिवायत से वाज़िह हो जाता है वह वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी वफ़ात के वक़्त कुछ नहीं छोड़ा न कोई दिरहम न दीनार न ग़ुलाम न लौंडी और न कुछ और चीज़ सिवाए अपनी सफ़ैद ख़च्चर और अपने हथियारों के और एक ज़मीन के जिसे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सदक़ा मेंदे चुके थे।

हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सात दीनार हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास रखवाए थे। आख़िरी बीमारी में फ़रमाया हे आयशा! वे सोना जो तुम्हारे पास था किया हुआ? अर्ज़ किया मेरे पास है। फ़रमाया सदक़ा फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर बेहोशी हो गई और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा आपके साथ व्यस्त हो गईं। जब होश आई तो पूछा क्या वे सोना सदक़ा कर दिया? अर्ज़ किया अभी नहीं किया। आपने वे दीनार मंगवा कर अपने हाथ पर रखकर गिने और फ़रमाया मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपने रब पर किया तवक्कुल हुआ अगर ख़ुदा से मुलाक़ात और दुनिया से रुख़स्त होते वक़्त ये दीनार उसके पास हूँ। फिर वे दीनार सदक़ा कर दिए और इसी रोज़ आपकी वफ़ात हो गई। (الزوائد هيثمی جلد ٣ صفحه ١٢٤)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आशिक़-ए-सादिक़ हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं :

"ख़ुदाए तआला ने बेशुमार ख़ज़ायन के दरवाज़े आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर खोल दीए अत: आँजनाब ने इन सबको ख़ुदा की राह में ख़र्च किया और किसी प्रकार की तनपरवरी में एक रुपया भी ख़र्च नहीं हुआ। न कोई इमारत बनाई न कोई बारगाह तैयार हुई बल्कि एक छोटे से कच्चे कोठे में जिसको ग़रीब लोगों के कोठों पर कुछ भी तर्जीह न थी अपनी सारी उमर बसर की। बुराई करने वालों से नेकी करके दिखलाई और वे जो कष्ट देने थे उनको उन की मुसीबत के वक़्त अपने माल से ख़ुशी पहुंचाई। सोने के लिए अक्सर ज़मीन पर बिस्तर और रहने के लिए एक छोटा सा झोंपड़ा और खाने के लिए नॉन जौ या भूखे रहा करते। दुनिया की दौलतें अत्यधिक उन को दी गईं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पाक हाथों को दुनिया से थोड़ा भी आलूदा नहीं किया और हमेशा गरीबी को ताकत पर और मिस्कीनी को अमीरी पर इख़तियार रखा और उस दिन से जो ज़हूर फ़रमायाता उस दिन तक जो अपने रफीक़-ए-आला से जा मिले अपने ख़ुदा के सिवाए किसी को कुछ चीज़ नहीं समझा।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 276 से 292 हाशिया नंबर 11)

अत: किसी भी रियासत के सरबराह और हुक्काम के लिए आपकी ज़ाती और परिवारिक ज़िंदगी की यह

बसीरत अफ़रोज़ जीवनी मार्गदर्शक है इसके बग़ैर वे लोग और प्रजा के हुक़ूक़ की सही रंग में न निगेहदाशत कर सकते हैं और न बजा आवरी कर सकते हैं।

आज के हुकमरानों का और तो और मुसलमान हुकमरानों का क़ौमी ख़ज़ानों के ज़ाती और व्यक्तिगत अग़राज़ के लिए व्यर्थ में असीमित इस्तिमाल का जो हाल पढ़ने, सुनने और देखने को मिलता है वे वर्णन करने योग्य नहीं है अल्लाह तआला ही उनको समझ आता करे और हमारे आक़ा हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण के हज़ारवें हिस्सा पर ही अमल करने की तौफ़ीक़ मिल जाए तो रियाया के अहवाल दुरुस्त हो सकते हैं।

श्रोतागण! हमारे प्यारे इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस्लाम की इस अमन बख़श तालीम और मुहसिन-ए-इन्सानियत हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पाक नमूनों के हवाले से आज दुनिया के तरक़्क़ी याफताह बड़े बड़े देशों के पर्लेमेंट्स में खड़े हो कर अदल और इंसाफ क़ायम करने और वैश्विक बेचैनी और बदअमनी और इंतहापसंदी को रोकने और तीसरी जंग-ए-अज़ीम के बादल जो सिर पर मंडला रहे हैं उन से बचने के लिए आलमी सरबराहों को सचेत फ़र्मा रहे हैं।

आख़िर पर उनमें से केवल दो इक़तेबास पेश करके अपनी तक़रीर को ख़त्म करूँगा 27 जून 2012 ई. को कैपिटल हिल वाशिंगटन डी सी में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कांग्रेस विसेंट के अहम अराकीन, व्हाइट हाऊस के स्टाफ़ और ग़ैर सरकारी तन्ज़ीमों के रहनुमाओं और मुख़्तलिफ़ देशों के सफ़ीरों की मौजूदगी में ख़िताब फ़रमाया इस में आपने फ़रमाया :

"जंग अज़ीम प्रथम के अंत के बाद कुछ देशों के रहनुमाओं की यह ख़ाहिश थी कि भविष्य में अच्छे और पुरअमन बैनुल अक़वामी ताल्लुक़ात क़ायम हूँ। इसलिए आलमी अमन के क़ियाम की एक कोशिश के तौर पर लीग आफ़ नेशनज़ क़ायम की गई। इस का बुनियादी उद्देश्य दुनिया में अमन क़ायम करना और भविष्य की जंगों को रोकना था। बदक़िस्मती से इस लीग के उसूल और उसकी क़रारदादों में कुछ नक़ायस और ख़ामियाँ थीं। इसलिए वे समस्त अक़्वाम के हुक़ूक़ का सही रंग में इन्साफ पर आधारित तहफ़्फ़ुज़ न कर सके। इस अदम-ए-मुसावात का नतीजा यह निकला कि देरपा अमन क़ायम नहीं हो सका। लीग की कोशिशें नाकाम हो गईं और इस के बराह-ए-रस्त नतीजा के तौर पर जंग-ए-अज़ीम दोयम बरपा हुई। इसके बाद जो बेमिसल तबाही और बर्बादी हुई हम सब इस से आगाह हैं जिस में क़रीबन सात करोड़ पच्चास लाख लोग अपनी जानों से हाथ धो बैठे जिनमें एक बड़ी संख्या मासूम शहरीयों की थी। यह जंग दुनिया की आँखें खोलने के लिए काफ़ी होनी चाहिए थी। इसके नतीजा में ऐसी पालिसीयां बननी चाहिऐं थीं जिनके ज़रीया इन्साफ़ की बुनियाद पर समस्त फ़रीक़ैन को उनके जायज़ हुक़ूक़ मिलते और इस तरह यह तंज़ीम आलमी अमन के क़ियाम का एक माध्यम साबित होती। इस वक़्त की हुकूमतों ने बिलाशुबा एक हद तक क़ियाम-ए-अमन की कोशिशें कीं और इस तरह अक़्वाम-ए-मुत्तहदा की तशकील अमल में आई। जबकि जल्द ही यह बात बिल्कुल वाज़ेह हो गई कि अक़वाम-ए-मुत्तहिदा का आला और बहुत अहम बुनियादी

उद्देश्य पूरा नहीं सका।'' (आलमी बोहरान और अमन की राह, पृष्ठ 74 से 75)

इसी तरह 11 जून 2013 ई. को पार्लियामेंट हाऊस लंदन में दिए गए भाषण में फ़रमाया :

"समय की अहम आवश्यकता है कि वैश्विक शांति और सौहार्द के क़ियाम की कोशिश में सब लोग एक दूसरे का और समस्त धर्मों का एहतिराम क़ायम करें अन्यथा ख़तरनाक परिणाम निकल सकते हैं। दुनिया एक ग्लोबल विलेज बन गई है। इसलिए परस्पर सम्मान की कमी और अमन को बढ़ावा देने के लिए परस्पर एकता पैदा न होने की सूरत में सिर्फ मुक़ामी आबादी या शहर या किसी एक देश को नुक़्सान नहीं पहुँचेगा बल्कि वास्तव में यह समस्त संसार की तबाही का कारण होगा। हम सभी पिछली दो वैश्विक जंगों की भयानक तबाहियों से बख़ूबी आगाह हैं। कुछ देशों की पालिसीयों की वजह से एक और वैश्विक जंग के आसार दुनिया के उफ़क पर प्रकट हो रहे हैं। अगर वैश्विक जंग छिड़ गई तो पश्चिमी दुनिया भी इस के देर तक रहने वाले तबाहकुन परिणामों से प्रभावित होगी। आइए स्वयं को इस तबाही से बचा लें। आइए अपनी आइन्दा आने वाली नसलों को जंग के मोहलिक और तबाहकुन नतायज से महफ़ूज़ कर लें क्योंकि यह भयावह जंग ऐटमी जंग ही होगी और दुनिया जिस तरफ़ जा रही है इस में यक़ीनी तौर पर एक ऐसी जंग छिड़ने का ख़तरा है। इन भयावह परिणामों से बचने के लिए इन्साफ़, दियानतदारी और ईमानदारी को अपनाना होगा और वे वर्ग जो नफ़रतों को हवा दे कर अमन आलम को तबाह करने के तैयार हैं उनके ख़िलाफ़ एकसाथ हो कर उन्हें रोकना होगा।

मेरी ख़ाहिश और दिल से दुआ है कि ख़ुदा तआला बड़ी ताक़तों को इस सिलसिला में अपनी ज़िम्मेदारियाँ और कर्तव्य इंतिहाई मुंसिफ़ाना और दरुस्त तरीक़ पर निभाने की तौफ़ीक़ अता करे आमीन।''

(आलमी बोहरान और अमन की राह, पृष्ठ 129)

☆ ☆ ☆

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

अपने देशवासियों से
अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब का निवेदन

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब (1835-1908 ई) ने अपने जीवनकाल में 80 से अधिक पुस्तकें लिखीं। अपनी अंतिम पुस्तक "पैग़ाम -ए-सुलह" (मई 1908 ई) में आप लिखते हैं:

"हे प्रियजनो! पुराने अनुभव तथा बार-बार की परीक्षा ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि भिन्न-भिन्न क़ौमों के नबियों तथा रसूलों को अपमान के साथ याद करना और उन को गालियाँ देना एक ऐसा ज़हर है जो न केवल अन्तत: शरीर को नष्ट करता है अपितु रूह (आत्मा) को भी नष्ट करके धर्म एवं संसार दोनों को तबाह करता है। वह देश आराम से जीवन व्यतीत नहीं कर सकता जिसके निवासी एक दूसरे के धार्मिक पथ-प्रदर्शक के दोष निकालने तथा मानहानि में व्यस्त हैं तथा उन क़ौमों में सच्ची एकता कदापि नहीं हो सकती, जिन में से एक क़ौम या दोनों क़ौमें एक-दूसरे के नबी या ऋषि तथा अवतार को बुराई अथवा गालियों के साथ याद करते रहते हैं। अपने नबी या पेशवा का अनादर सुन कर किसे जोश नहीं आता। विशेष तौर पर मुसलमान एक ऐसी क़ौम है कि वह यद्यपि अपने नबी को ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा तो नहीं बनाती, परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उन सम्पूर्ण ख़ुदा के चुने हुए मनुष्यों से श्रेष्ठतम समझते हैं कि जो मां के पेट से पैदा हुए। अत: एक सच्चे मुसलमान से सुलह करना किसी स्थिति में उस स्थिति के अतिरिक्त संभव नहीं कि उनके पवित्र नबी के बारे में जब वार्तालाप हो तो आदर और पवित्र शब्दों के अतिरिक्त याद न किया जाए।

और हम लोग दूसरी क़ौमों के नबियों के बारे में अपशब्द कदापि नहीं निकालते अपितु, हम यही आस्था रखते हैं कि जितने संसार में विभिन्न क़ौमों के लिए नबी आए हैं तथा करोड़ों लोगों ने उनको मान लिया है तथा संसार के किसी एक भाग में उनका प्रेम एवं प्रतिष्ठा पैदा हो गयी है और उस प्रेम और आस्था पर एक युग बीत गया है तो बस उनकी सच्चाई पर यही एक तर्क पर्याप्त है, क्योंकि यदि वे ख़ुदा की ओर से न होते तो यह मान्यता करोड़ों लोगों के हृदयों में न फैलती। ख़ुदा अपने मान्य पुरुषों का सम्मान दूसरों को कदापि नहीं देता और यदि कोई झूठा उनकी कुर्सी पर बैठना चाहे तो शीघ्र तबाह होता तथा मारा जाता है। इसी आधार पर हम वेद को भी ख़ुदा की ओर से मानते हैं तथा उसके ऋषियों को महान और पवित्र समझते हैं।....

प्यारो! सुलह जैसी कोई भी वस्तु नहीं। आओ हम इस इक़रार के द्वारा एक हो जाएँ और एक क़ौम बन जाएँ। आप देखते हैं कि आपसी झुठलाने से कितनी फूट पड़ गयी है और देश को कितनी हानि पहुँची है। आओ अब यह भी आज़मा लो कि आपसी सत्यापन की कितनी बरकतें हैं। सुलह का उत्तम उपाय यही है, अन्यथा किसी अन्य पहलू से सुलह करना ऐसा ही है जैसे कि एक फोड़े को जो साफ

और चमकता हुआ दिखाई देता है उसी स्थिति में छोड़ दें और उसकी ज़ाहरी चमक पर प्रसन्न हो जाएँ। हालाँकि उसके अन्दर सड़ी एवं दुर्गन्धयुक्त पीप मौजूद है।

मुझे यहाँ इन बातों की चर्चा करने की कुछ आवश्यकता नहीं कि वह कपट और फ़साद जो हिन्दू और मुसलमानों में आजकल बढ़ता जाता है। इसके कारण धार्मिक मतभेदों तक सीमित नहीं हैं अपितु इसके अन्य कारण भी हैं जो सांसारिक इच्छाओं एवं समस्याओं से संबंधित हैं। जैसे हिन्दुओं की प्रारंभ से यह इच्छा है कि सरकार और देश के मामलों में उनका हस्तक्षेप हो या कम से कम यह कि सरकारी मामलों में उनसे राय ली जाए और सरकार उनकी प्रत्येक शिकायत को ध्यान से सुने और सरकार के बड़े-बड़े पद अंग्रेज़ों की भांति उन्हें भी मिला करें। मुसलमानों से यह ग़लती हुई कि हिन्दुओं के हम संख्या में कम हैं और यह सोचा कि इन प्रयासों में भागीदार न हुए और सोचा कि इन समस्त प्रयासों का यदि कुछ लाभ है तो वह हिन्दुओं के लिए है न कि मुसलमानों के लिए। इसलिए न केवल भागीदारी से पृथक रहे अपितु विरोध करके हिन्दुओं के प्रयास में रुकावट हुए जिससे वैर में वृद्धि हुई।

....सज्जनो! इस (आपसी लड़ाई और शत्रुता) का कारण वास्तव में धर्म ही है इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। यदि आज वही हिन्दू कलिमा तय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ कर मुसलमानों से गले मिल लें या मुसलमान ही हिन्दू बन कर अग्नि-वायु इत्यादि की उपासना वेद के आदेशानुसार प्रारंभ कर दें और इस्लाम को अलविदा कह दें तो जिन झगड़ों का नाम अब राजनीतिक रखते हैं वह एक क्षण में ऐसे समाप्त हो जाएँ कि जैसे कभी थे ही नहीं।

अत: इस से स्पष्ट है कि समस्त वैर और द्वेष की जड़ वास्तव में धार्मिक मतभेद है। यही धार्मिक मतभेद हमेशा से जब चरम सीमा तक पहुँचता रहा है तो ख़ून की नदियाँ बहाता रहा है। हे मुसलमानो! जब कि हिन्दू सज्जन तुम्हें धार्मिक मतभेद के कारण एक ग़ैर क़ौम समझते हैं और तुम भी इस कारण से उनको एक ग़ैर क़ौम समझते हो। इसलिए जब तक इस कारण का निवारण नहीं होगा, तुम में और उन में क्योंकर एक सच्ची सफाई पैदा हो सकती है। हां संभव है कि मक्कारी के तौर पर आपस में कुछ दिनों के लिए मेलजोल भी हो जाए, परन्तु वह हार्दिक शुद्धता जिसे वास्तव में सफ़ाई कहना चाहिए केवल उसी स्थिति में पैदा होगी जबकि आप लोग वेद और वेद के ऋषियों को सच्चे हृदय से ख़ुदा की ओर से स्वीकार कर लोगे। और ऐसा ही हिन्दू लोग भी अपनी संकीर्णता को दूर करके हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नबुव्वत का सत्यापन कर लेंगे। याद रखो और भली भांति स्मरण रखो कि तुम में और हिन्दू सज्जनों में सच्ची सुलह कराने वाला केवल यही एक उपाय और यही ऐसा पानी है जो दिल की गन्दगियों को धो देगा। और यदि वे दिन आ गए हैं कि ये दोनों बिछड़ी हुई क़ौमें आपस में मिल जाएँ तो ख़ुदा उनके दिलों को भी इस बात के लिए खोल देगा, जिसके लिए हमारे दिल को खोल दिया है।

परन्तु इसके साथ आवश्यक होगा कि हिन्दू लोगों के साथ सच्ची सहानुभूति से व्यवहार करो। अच्छा सदव्यवहार और नर्मी अपनी आदत बना लो और स्वयं को ऐसे कार्यों से अलग रखो जिन से उन्हें दु:ख पहुँचे परन्तु वे कार्य हमारे धर्म में न तो अनिवार्यताओं में से हों और न धार्मिक कर्त्तव्यों में से। अत: यदि

हिन्दू लोग अपनी हार्दिक सच्चाई से हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सच्चा नबी मान लें और उन पर ईमान लाएँ तो यह फूट जो गाय के कारण है उसको भी मध्य से हटा दिया जाए। जिस वस्तु को हम हलाल (वैध) जानते हैं हम पर अनिवार्य नहीं कि अवश्य उसको इस्तेमाल भी करें। बहुत सी ऐसी वस्तुएँ हैं कि हम हलाल तो समझते हैं परन्तु कभी हम ने इस्तेमाल नहीं कीं। उन से अच्छा व्यवहार तथा उपकार करना हमारे धर्म की वसीयतों में से एक वसीयत है।

...मैं इस समय किसी विशेष क़ौम की अकारण भर्त्सना करना नहीं चाहता और न किसी का हृदय दुखाना चाहता हूँ अपितु अत्यन्त खेद के साथ आह भरकर मुझे यह कहना पड़ा है कि इस्लाम वह पवित्र सुलह कराने वाला धर्म था, जिस ने किसी क़ौम के पेशवा पर प्रहार नहीं किया तथा क़ुर्आन वह सम्मान योग्य किताब है जिसने क़ौमों में सुलह की नींव रखी और प्रत्येक क़ौम के नबी को मान लिया।

...हे मेरे प्रिय देशवासियो! मैंने आपकी सेवा में यह वर्णन इसलिए नहीं किया कि मैं आपको दु:ख दूँ या आपका दिल तोड़ूँ, अपितु मैं अत्यन्त नेक नीयत के साथ यह कहना चाहता हूँ कि जिन क़ौमों ने यह आदत अपना रखी है और अपने धर्म में यह अवैध ढंग अपना रखा है कि अन्य क़ौमों के नबियों को अपशब्दों एवं गालियों से याद करें। वे न केवल अनुचित हस्तक्षेप से जिसके साथ उनके पास कोई सबूत नहीं। ख़ुदा के गुनाहगार हैं अपितु वे उस गुनाह के भी हैं कि मानव जाति में फूट और शत्रुता का बीज बोते हैं। आप दोषी दिल थाम कर मुझे इस बात का उत्तर दें कि यदि कोई व्यक्ति किसी के पिता को गाली दे या उसकी मां पर कोई लांछन लगा दे तो क्या वह अपने पिता के सम्मान पर स्वयं प्रहार नहीं करता और यदि वह व्यक्ति जिसे ऐसी गाली दी गई है उत्तर में उसी प्रकार गाली सुना दे तो क्या यह कहना अनुचित होगा कि सामने से गाली दिए जाने का कारण वास्तव में वही व्यक्ति है जिसने गाली देने में पहल की। इस स्थिति में वह अपने माता-पिता के सम्मान का स्वयं शत्रु होगा।

ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में हमें इतने आदर एवं अख़लाक़ (शिष्टाचार) का पाठ पढ़ाया है कि वह कहता है कि -

لَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًّا بِغَيْرِ عِلْمٍ

(अल अन्आम - 109)

अर्थात् तुम मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) की मूर्तियों को भी गाली मत दो कि वे फिर तुम्हारे ख़ुदा को गालियाँ देंगे। क्योंकि वे उस ख़ुदा को जानते नहीं।अब देखो कि इसके बावजूद कि ख़ुदा की शिक्षा के अनुसार मूर्ति कुछ चीज़ नहीं है, परन्तु फिर भी ख़ुदा मुसलमानों को ये शिष्टाचार सिखाता है कि मूर्तियों को बुरा भला कहने से अपनी ज़ुबान बन्द रखो और केवल नर्मी से समझाओ। ऐसा न हो कि वे लोग उग्र होकर ख़ुदा को गालियाँ निकालें और उन गालियों का कारण तुम ठहर जाओ। अत: उन लोगों का क्या हाल है जो इस्लाम के उस महान नबी को गालियाँ देते तथा उसे अनादरपूर्ण शब्दों से याद करते और असभ्य लोगों की तरह उनके सम्मान और आचरण पर प्रहार करते हैं। वह महान नबी जिस का नाम लेने से इस्लाम के बड़े-बड़े बादशाह सिंहासन से उतरते हैं और उसके आदेशों के सामने सर झुकाते तथा

स्वयं को उसके तुच्छ दासों में से समझते हैं। क्या यह सम्मान ख़ुदा की ओर से नहीं। ख़ुदा के दिए हुए सम्मान के मुक़ाबले पर तिरस्कार करना उन लोगों का काम है जो ख़ुदा से लड़ना चाहते हैं।

...इसलिए हे मेरे देशवासी भाइयो! यह संक्षिप्त पत्रिका जिसका नाम है पैग़ाम-ए-सुलह (मैत्री-सन्देश) आदरपूर्वक आप सब सज्जनों की सेवा में प्रस्तुत की जाती है और हार्दिक सच्चाई के साथ दुआ की जाती है कि वह शक्तिमान ख़ुदा आप लोगों के दिलों पर स्वयं इल्हाम (आकाशवाणी) करे और हमारी हमदर्दी का राज़ आप के दिलों पर खोल दे ताकि आप इस मित्रवत् उपहार को किसी विशेष उद्देश्य और स्वार्थ पर आधारित न समझें। प्रियजनो! आख़िरत (परलोक) का मामला तो जन सामान्य पर प्राय: गुप्त रहता है और परलोक का रहस्य उन्हीं पर खुलता है जो मरने से पूर्व मरते हैं परन्तु दुनिया की भलाई और बुराई को प्रत्येक दूरदर्शी बुद्धि पहचान सकती है।

यह बात किसी पर गुप्त नहीं कि एकता एक ऐसी बात है कि वे विपत्तियाँ जो किसी प्रकार से दूर नहीं हो सकतीं और वे संकट जो किसी उपाय से हल नहीं हो सकते वे एकता से हल हो जाती हैं। अत: एक बुद्धिमान से दूर है कि एकता की बरकतों से स्वयं को वंचित रखे। हिन्दू तथा मुसलमान इस देश में दो ऐसी क़ौमें हैं कि यह एक असंभव विचार है कि किसी समय जैसे हिन्दू एकत्र होकर मुसलमानों को इस देश से बाहर निकाल देंगे या मुसलमान एकत्र होकर हिन्दुओं को देश से निष्कासित कर देंगे अपितु अब तो हिन्दू-मुसलमान का परस्पर चोली-दामन का साथ हो रहा है। यदि एक पर कोई संकट आए तो दूसरा भी उसमें भागीदार हो जाएगा और यदि एक क़ौम दूसरी क़ौम को मात्र अपने व्यक्तिगत अभिमान और बड़प्पन से तिरस्कृत करना चाहेगी तो वह भी तिरस्कार से सुरक्षित नहीं रहेगी और यदि उनमें से कोई अपने पड़ोसी के साथ सहानुभूति करने में असमर्थ रहेगा तो उसकी हानि वह स्वयं भी उठाएगा। जो व्यक्ति तुम दोनों क़ौमों में से दूसरी क़ौम के विनाश की चिन्ता में है, उसका उदाहरण उस व्यक्ति के समान है जो एक शाख पर बैठ कर उसी को काटता है। आप लोग अल्लाह तआला की कृपा से शिक्षित भी हो गए अब वैर को त्याग कर प्रेम में उन्नति करना शोभनीय है और निर्दयता को त्याग कर सहानुभूति धारण करना आप की बुद्धिमत्ता के यथायोग्य है। संसार के संकट भी एक रेगिस्तान की यात्रा है जो बिल्कुल गर्मी और सूर्य के ताप के समय की जाती है। इसलिए इस दुर्गम मार्ग के लिए आपसी सहमति के उस शीतल जल की आवश्यकता है जो इस जलती हुई आग को शीतल कर दे और प्यास के समय मरने से बचाए।

ऐसे संवेदनशील समय में यह लेखक आपको सुलह (मैत्री) के लिए बुलाता है, जबकि दोनों क़ौमों को सुलह की बहुत आवश्यकता है। संसार पर नाना प्रकार की विपत्तियाँ आ रही हैं, भूकम्प आ रहे हैं, अकाल पड़ रहा है और प्लेग ने भी अभी पीछा नहीं छोड़ा और जो कुछ ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है वह भी यही है कि यदि संसार अपने बुरे कर्मों से नहीं रुकेगा और बुरे कार्यों से तोब: नहीं करेगा तो संसार पर कठोर से कठोर बलाएं आएँगी। एक विपत्ति अभी समाप्त नहीं हुई होगी कि दूसरी विपत्ति प्रकट हो जाएगी। अन्तत: मनुष्य अत्यन्त दुखी हो जाएँगे कि यह क्या होने वाला है तथा बहुत से संकटों के बीच फंसकर पागलों की भांति हो जाएँगे। अत: हे मेरे देशवासी भाइयो! इससे पूर्व कि वे दिन आएँ होशियार

हो जाओ और चाहिए कि हिन्दू एवं मुसलमानों को परस्पर सुलह कर लेनी चाहिए और जिस क़ौम में कोई ज़्यादती है जो सुलह में बाधक हो उस ज़्यादती को वह क़ौम छोड़ दे अन्यथा परस्पर दुश्मनी का सम्पूर्ण गुनाह उसी क़ौम की गर्दन पर होगा।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, लेखक: मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी 1835-1908 ई)

_____

पृष्ठ 5 का शेष....

فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ है ऐसे लोग हैं जो अभी विश्वास और ईमान और ज्ञान से कम हिस्सा रखते हैं अपितु उपरोक्त आयतों से यह भी खुलता है कि यहाँ यह आदेश आया فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ का पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है जिसका पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया गया है क्योंकि प्रारंभिक आयत में जिस से यह आयत सम्बन्ध रखती है आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ही कथन है अर्थात् यह कि اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا अर्थात् इन समस्त आयतों का बामुहावरा अनुवाद यह है कि मैं ख़ुदा तआला के अतिरिक्त कोई अन्य हकम जो मुझ में और तुम में फैसला करे निर्धारित नहीं कर सकता वह वही है जिसने तुम पर विस्तृत किताब उतारी तो जिन को इस किताब का ज्ञान दिया गया है वे उसका अल्लाह तआला की ओर से होना भली-भांति जानते हैं अत: तू (हे अनजान आदमी!) सन्देह करने वालों में से मत हो।

अब अनुसन्धान से स्पष्ट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं सन्देह नहीं करते अपितु सन्देह करने वालों को गवाहों और तर्कों के हवाले से मना करते हैं अत: ऐसे खुले-खुले वर्णन के बावजूद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर रसूल होने के बारे में सन्देह को सम्बद्ध करना अनभिज्ञता, ज्ञानहीनता या मात्र पक्षपात नहीं तो क्या है? (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 1-6)

☆ ☆ ☆

कष्ट के निवारण का उपाय

एक व्यक्ति ने अपनी घरेलू परेशानियों का वर्णन किया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि : पूरी तरह से ख़ुदा पर भरोसा, विश्वास और आशा रखो तो सब कुछ हो जाएगा। और हमें पत्र से हमेशा याद कराते रहा करो, हम दुआ करेंगे।

(मलफूज़ात जिल्द 3)

(आज हमें अपनी मुश्किलों और परेशानियों के खत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह की सेवा में लिखने चाहिए।)

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

राजनीति विज्ञान के महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर (गूगल के माध्यम से)

1. भारत में संसदीय प्रणाली का स्वरूप किस देश से लिया गया?

उत्तर : इंग्लैंड.

2. संविधान में उपराष्ट्रपति का पद किस देश के संविधान से लिया गया है?

उत्तर : अमेरिका.

3. किस देश के संविधान से समानता,स्वतंत्रता एवं बंधुत्व का सिद्धांत अपनाया गया?

उत्तर : फ्रांस.

4. समवर्ती सूची किस देश के संविधान से ली गई है?

उत्तर : ऑस्ट्रेलिया.

5. संविधान में संशोधन की प्रक्रिया को किस देश के संविधान से ग्रहण किया गया?

उत्तर : दक्षिण अफ्रीका.

6. संविधान में आपातकालीन उपबंध किस देश के संविधान से लिए गए हैं?

उत्तर : जर्मनी.

7. संविधान की आत्मा किसे कहा गया है?

उत्तर : संविधान की प्रस्तावना/उद्देशिका.

8. संविधान की प्रस्तावना को मूल ढांचा किसने माना है?

उत्तर : सर्वोच्च न्यायालय.

9. प्रस्तावना में 'समाजवाद' एवं 'पंथनिरपेक्ष' शब्द कब सम्मिलित किए गए?

उत्तर : 42 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1973 के द्वारा.

10. संविधान के अंतर्गत भारतीय संविधान किसमें निहित है?

उत्तर : भारत की जनता.

11. 'संविधान भारत की जनता में निहित है', संविधान में समाहित कौन से शब्द यह प्रदर्शित करते हैं?

उत्तर : "हम भारत के लोग"

12. संविधान की प्रस्तावना में अब तक कितनी बार संशोधन किया जा चुका है?

उत्तर : एक बार.

13. भारतीय संविधान में कुल कितनी अनुसूचियां हैं?

उत्तर : 12

14. संविधान में भूमि सुधार अधिनियम किस अनुसूची में रखे गए?

उत्तर : नौवीं अनुसूची.

15. संविधान में दल बदल संबंधी अधिनियम किस सूची में रखे गए?

उत्तर : दसवीं अनुसूची.

☆ ☆ ☆

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○ (النحل 12)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal | flipkart
amazon.com | paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO DL LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for His servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone. Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical, Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

दिल की लापरवाही का इलाज- नमाज़ और इस्तगफार

सैर से वापस होते हुए एक हाफिज साहब ने आपसे हाथ मिलाया और निवेदन किया कि मैं अंधा हूं थोड़ी देर खड़े होकर मेरी बात सुन लें। हजूर खड़े हो गए। उसने कहा मैं आपका आशिक हूं और चाहता हूं कि मेरी लापरवाही दूर हो जाए। हजरत साहब ने फ़रमाया कि

नमाज़ और इस्तगफार दिल की लापरवाही के अच्छे इलाज हैं। नमाज़ में दुआ करनी चाहिए कि मुझ में और मेरे गुनाहों में दूरी पैदा हो जाए। सच्चाई से इंसान दुआ करता रहे तो निश्चित है कि किसी समय स्वीकार हो जाए। जल्दी करनी अच्छी बात नहीं होती। जमींदार एक खेत बोता है तो उसी समय नहीं काट लेता, बेसब्री करने वाला अभागा रहता है। नेक इंसानों की यह निशानी है कि वह बेसब्री नहीं करते। बेसब्री करने वाले बड़े-बड़े बदनसीब देखे गए हैं। अगर एक इंसान एक कुंआ खोदे और 20 हाथ खोदे और जब एक हाथ रह जाए तो उस समय बेसब्री से छोड़ दे तो अपनी सारी मेहनत को बर्बाद करता है, अगर सब्र से एक हाथ और भी खोद ले तो वांछित उद्देश्य को प्राप्त कर ले। यह ख़ुदा की आदत है कि शोक और मोहब्बत और अध्यात्म ज्ञान की नेमत हमेशा दुख उठाने के बाद दिया करता है। अगर हर एक नेमत आसानी से मिल जाए तो उसकी कदर नहीं होती। सअदी ने क्या ही अच्छा कहा है:

گر نباشد بدوست راہ بُردن شرط عشق است در طلب مُردن

(अनुवाद : यद्यपि महबूब तक पहुंच बनाने का कोई माध्यम न हो फिर भी इश्क की मांग यह है कि उसकी तलाश में जान लगा दी जाए।) (मलफूज़ात जिल्द - 3)